ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप
(Patterns of Rural Settlements)

बस्तियों के 'प्रकारों' और 'प्रतिरूपों' में भेद
(Difference between 'types' and 'patterns' of settlements)

पाठकों को मानवीय बस्तियों के '**प्रकारों**' और '**प्रतिरूपों**' के भेदों को खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। भूगोल के विद्यार्थी प्रायः इस भेद को समझने में भूल कर जाते हैं।

मानवीय बस्तियों का 'प्रकार' (type) तो किसी बस्ती में मकानों की संख्या और मकानों के बीच में पारस्परिक दूरी के आधार पर निश्चित होता है। अस्तु, अलग-अलग बसे हुए एकाकी मकान, झोपड़ी, पास-गृह, फार्म-गृह को एकाकी या **प्रकीर्ण** प्रकार की बस्ती कहते हैं। जिस बस्ती में मकान पास-पास बने होते हैं, वह **सघन** प्रकार की बस्ती है, चाहे वह दो चार घरों का छोटा पुरवा हो, या गाँव हो अथवा बड़ा नगर हो। अलग-अलग परन्तु निकट स्थित घरों की बस्ती **अपखण्डित** प्रकार की होती है।

बस्तियों के प्रतिरूप (patterns) उन बस्तियों की **आकृति** (shape) के अनुसार होते हैं, इनको मकानों और मार्गों की स्थिति के क्रम और व्यवस्था के आधार पर निश्चित किया जाता है। उदाहरण के लिये, किसी सड़क या नहर के किनारे बसे हुए घरों की बस्ती पंक्तिबद्ध या **रेखीय प्रतिरूप** (linear patterns) की होती है, किन्हीं दो या अधिक सड़कों के चौराहों (cross-roads) पर बसी हुई बस्ती **चौकपट्टी प्रतिरूप** (checkerboard pattern) की होती है। किसी अन्तरीप के सिरे पर बसी हुई बस्ती **तीर प्रतिरूप** (arrow pattern) की होती है। इन प्रतिरूपों के आगे समझाया गया है। किसी-किसी पुस्तक में प्रतिरूपों (patterns) का वर्णन करते हुए 'प्रतिरूप' के लिये 'प्रकार' (type) शब्द का प्रयोग कर दिया गया है, वहाँ उस 'प्रकार' शब्द का अर्थ, 'प्रतिरूप' ही समझना चाहिये, उदाहरण के लिये, फ़िंच-ट्रेवार्था की पुस्तक में 'प्रतिरूप' (pattern) के अनुच्छेद में 'type' शब्द का अर्थ 'pattern' ही समझना चाहिये।[11]

ग्रामीण बस्तियों के प्रतिरूप का विवरण
(Details of the patterns of rural settlements)

ग्रामिण बस्तियों के मुख्य प्रतिरूप निम्नलिखित होते हैं —

1. **रेखीय प्रतिरूप** (Linear pattern) — किसी सड़क या नदी अथवा नहर के किनारे-किनारे बसे हुए मकानों की बस्तियाँ रेखीय प्रतिरूप की होती हैं। इन मकानों के द्वार सड़क या नहर की ओर होते हैं। दोनों किनारों पर बसे हुए मकानों के द्वार परस्पर सामने होते हैं। इनमें मकान सटे हुए हो सकते हैं, अथवा कुछ-कुछ दूरी पर हो सकते हैं, आगे के मानचित्र में देहरादून ज़िले की दून घाटी में स्थित इस प्रकार के रेखीय अधिवास दिखलाये गये हैं। ऐसी बस्तियों को **रिबन** प्रतिरूप (ribbon pattern) या डोरी प्रतिरूप (string pattern) भी कहते हैं।

दून घाटी में स्थित रेखीय बस्तियों में प्रकीर्ण, सघन, संयुक्त और अपखण्डित चारों प्रकार की हैं। ये बस्तियाँ नहर के किनारे बसी हुई हैं। अजबपुर, कांवली, निम्बू वाला, मोथरों वाला, जाखन, शमशेर गढ़ इत्यादि गाँव सघन बस्तियाँ हैं। दूसरे गाँव पंडोंवाला, किशनपुर, रायतेवाला, माजरी, मुआफ़ी इत्यादि ऐसे हैं, जिनमें नहर के किनारे-किनारे बसे हुए दूर-दूर या निकटस्थ वासगृह हैं, जो खेतों के बीच में स्थित हैं। ऊपर के चित्र में आदर्श ढंग का रेखीय प्रतिरूप (typically linear pattern) दिखाया गया है।

जिन क्षेत्रों की भूमि नीची है और जहाँ वर्षा ऋतु में बाढ़ का जल भर जाया करता है, ऐसे बाढ़ क्षेत्रों (flood plain areas) में भी कुछ-कुछ ऊपर उठी हुई भूमि पर जहाँ-तहाँ एकाकी वासगृह बसे हुए हैं।

गंगा के उत्तरी मैदान में सड़कों के किनारे-किनारे बसे हुए गाँव प्रत्येक जिले में देखे जा सकते हैं।

2. **चौकपट्टी प्रतिरूप** (Checkerboard pattern) — मैदानों में जो गाँव दो मार्गों के मिलने के चौपले या क्रॉस (cross) पर बसने आरम्भ होते हैं, उन गाँवों की गलियाँ मार्गों के साथ मेल खाती

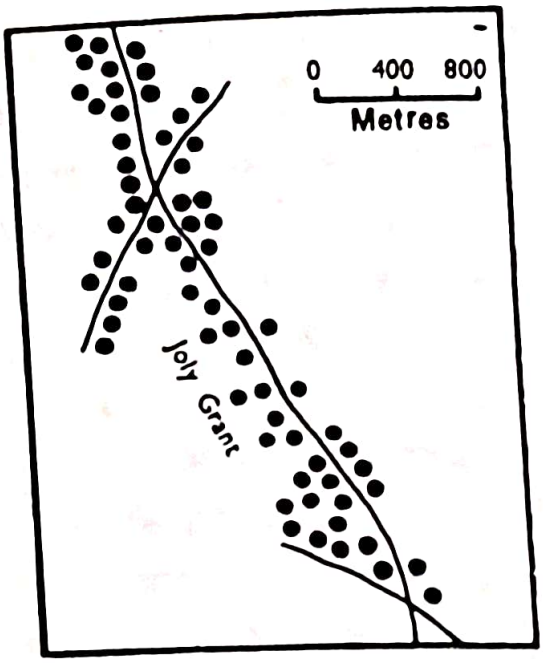

आदर्श रेखीय प्रतिरूप, जिसमें एकाकी वासगृह भी है तथा अपखण्डित भी है। यह उत्तर प्रदेश की एक बस्ती है।

हुई आयताकार (rectangular) प्रतिरूप में बनने लगती हैं, जो परस्पर लम्बवत् होती हैं। ऐसे गाँवों की बस्ती चौकपट्टी प्रतिरूप की होती हैं। इनकी गलियाँ समानान्तर होती हैं।

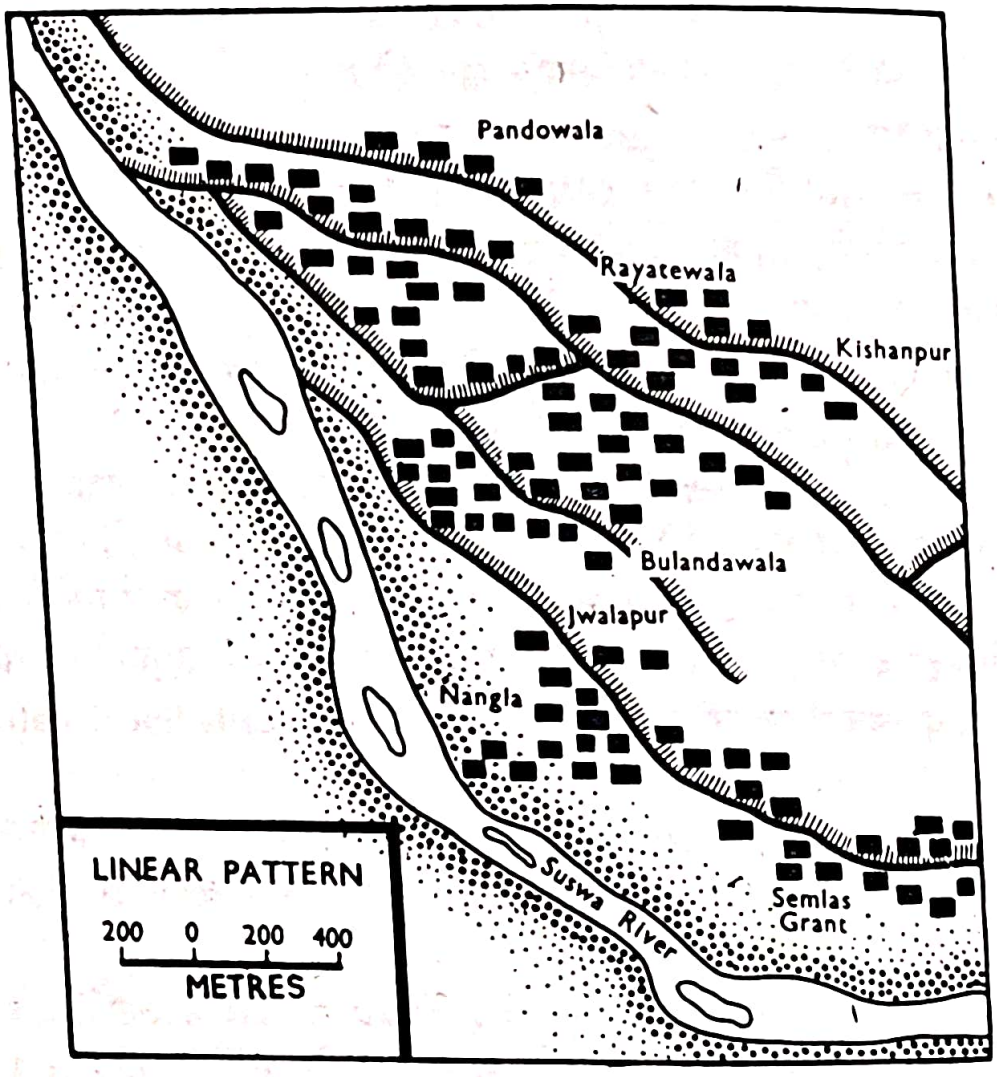

दून घाटी में नहरों के किनारे बसे गाँवों का रेखीय प्रतिरूप (Linear pattern)।

उत्तरी चीन में इस प्रकार के बहुत गाँव हैं। उत्तरी भारत में भी ऐसे गाँवों की काफी बड़ी संख्या है, जिनमें से अधिकांशतः धीरे-धीरे कस्बे बन जाते हैं। उदाहरणार्थ, मेरठ ज़िले के गाँवों में गेसूपुर, दोतार, अटसेनी, परतापुर, रेबड़ी खास, इत्यादि गाँव इस प्रकार के मार्गों के क्रॉस पर बसे हुए हैं।

3. अरीय त्रिज्या प्रतिरूप (Radial pattern) — भारतीय गाँवों का यह एक विशिष्ट प्रतिरूप है। इस प्रतिरूप के गाँवों में कई ओर से मार्ग आकर मिलते हैं या उस गाँव से बाहर अन्य गाँवों के लिये कई दिशाओं को मार्ग जाते हैं। इन गाँवों की गलियाँ गाँव के भीतरी भाग में आकर मिलती हैं, अतः वे समान्तर नहीं होतीं। गाँव में जो चौराहा होता है, उससे त्रिज्याकार (radial) मार्गों पर घर बसे हुए होते हैं। मकानों के सामने से मार्ग जाते हैं और मकानों की पीठ की ओर भी रास्ते हो सकते हैं। ये गाँव पैदल मार्गों या बैलगाड़ियों के मार्गों द्वारा आस-पास के गाँवों से मिले होते हैं।

भारत, चीन और पाकिस्तान के गाँवों में लगभग 35% संख्या इस प्रकार के अरीय प्रतिरूप गाँवों की होती हैं। मेरठ के समीपवर्ती क्षेत्र में पतला, निवारी, सिवाल खास, खुराना, भवन बहादुरनगर, चितसौना, मंडोना, खिलवाई, नरसिंहपुर, सोंडा, आदि इस प्रकार के उदाहरण हैं। तमिलनाडु राज्य के ओट्टाइनट्टम, उगनडान पट्टी आदि इस प्रतिरूप के गाँव हैं। बिहार, मध्य प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में इस प्रकार के गाँव प्रत्येक जिले में मौजूद हैं। यहाँ स्थान की कमी से उनके नामों की सूची नहीं दी जा रही है।

4. त्रिभुजाकार प्रतिरूप (Triangular pattern) — इस प्रकार के गाँव उन स्थानों पर होते हैं, जहाँ कोई सड़क या नहर दूसरी सड़क या नहर से जाकर मिले, परन्तु क्रॉस न करे। ऐसे गाँवों को नहर के या सड़क के पार जाकर बसने के बजाय, एक ही ओर फैलते रहने की सुविधा होती है। नहरों या सड़कों के द्वारा त्रिभुज की दो भुजायें बन जाती हैं और त्रिभुज के आधार की ओर खुली भूमि में गाँव फैलता रहता है।

5. वृत्ताकार प्रतिरूप (Circular pattern) — इस प्रकार के गाँव वे हैं, जिनमें किसी वृत्ताकार झील के किनारे-किनारे मकान बसे हों। भीमताल की बस्ती ऐसी ही है।

किसी केन्द्रीय मकान के चारों ओर या किसी वटवृक्ष अथवा तालाब के चारों ओर बसा हुआ गाँव भी वृत्ताकार हो सकता है। ऐसी बस्तियों के दो भेद होते हैं — (i) नाभिक (nucleated) बस्ती, जिसके केन्द्र में मुख्य घर होता है। (ii) नीहारिकीय (nebular) बस्ती, जिसके केन्द्र में कोई तालाब या पंचायती चबूतरा या वटवृक्ष, आदि होता है, जहाँ गाँव के लोग आकर मेले, उत्सव, सभा, आदि के लिये इकट्ठे होते हैं।

6. तीर प्रतिरूप (Arrow pattern) — इस प्रकार के गाँव किसी अन्तरीप के सिरे पर या नदी के नोकीले मोड़ पर बसे होते हैं। इनके अग्रभाग में मकानों की संख्या कम और पृष्ठ भाग में बढ़ती जाती है। इस प्रकार के गाँवों के कुछ उदाहरण निम्न हैं — (i) दक्षिणी भारत के सिरे पर कन्याकुमारी गाँव; (ii) उड़ीसा की चिलका झील प्रदेश में साना नैंसी गाँव; (iii) खम्भात की खाड़ी में गोध, कुंडा, गोपनाथ, आदि गाँव; (iv) मध्य प्रदेश की सोनार नदी के एक मोड़ पर असलाना, और बामनेर नदी पर सिंहपुर गाँव; (v) बिहार में बूढ़ी गंडक नदी के मोड़ों पर मंझोल, सिवारी, आहो, इत्यादि और बाघमती नदी के मोड़ पर चौथान; (vi) केरल में मुत्तमतुरा आदि गाँव।

7. तारा प्रतिरूप (Star pattern) — इस प्रकार के गाँव वे होते हैं, जो आरम्भ में तो अरीय अर्थात् त्रिज्या प्रतिरूप होते हैं, और बाद में उनसे बाहर की ओर जाने वाले मार्गों पर मकान बसते जाते हैं। त्रिज्या प्रतिरूप की बाहर को जाने वाली सड़कों पर आगे को फैलते हुए मकान बसने के बाद वह

गाँव तारा प्रतिरूप का हो जाता है। उसके बहुत-से सिरों से मार्ग बाहर की ओर निकले होते हैं। उत्तर प्रदेश के डहाना और भटौना गाँव इसके उदाहरण हैं।

8. अनियमित या अनाकार प्रतिरूप (Irregular or Amorphous pattern) — इस प्रकार के गाँव वे हैं, जो किन्हीं मार्गों के निर्माण से पूर्व ही बस गये थे। प्रत्येक घर उस स्थान पर बस गया, जहाँ उसके स्वामी को सुविधा हुई। बाद में गलियों और मार्गों के बनने पर गाँव की आकृति अनियमित रूप की हो गई। क्योंकि इस प्रकार की बस्तियों की कोई विशेष आकृति नहीं होती है, इसलिये इनको अनाकार प्रतिरूप (amorphous pattern) की बस्तियाँ कहते हैं। दक्षिणी चीन, समस्त भारत और पाकिस्तान के गाँव में सबसे बड़ी संख्या इस प्रकार के अनियमित प्रतिरूप के गाँवों की है।

9. शू-स्ट्रिंग प्रतिरूप (Shoe-string pattern) — जो गाँव किसी नदी के प्राकृतिक कूल के बाँध (levee) पर या समुद्रतटीय कटक (beach ridge) पर बसे हुए होते हैं, उनमें कटक शिखर (ridge crest) पर बनी हुई सड़क के किसी ओर मकान बसे हुए होते हैं। ऐसी बस्तियों को फ़िंच-ट्रेवार्था ने शू-स्ट्रिंग[12] प्रतिरूप की संज्ञा दी है। जापान के नीचे क्षेत्रों में जहाँ बाढ़ के मैदान हैं, वहाँ प्रायः बाढ़ें आया करती हैं। वहाँ पर ऊपर उठी हुई शुष्क भूमि पर जो मकान बनते हैं, वे इस प्रतिरूप की बस्ती होते हैं।

10. पंखा प्रतिरूप (Fan pattern) — इस प्रकार के गाँव नदियों के डेल्टाओं में बसे हुए हैं। महानदी, गोदावरी और कृष्णा के डेल्टाओं में इस प्रकार के गाँव हैं। हिमालय के पाद-प्रदेशों (piedmont areas) में भी जहाँ-जहाँ काँप-पंखे (alluvial fans) हैं, वहाँ बसे हुए गाँवों की आकृतियाँ इसी प्रतिरूप की हैं।

11. सीढ़ी प्रतिरूप (Terrace pattern) — इस प्रकार के गाँव पर्वतीय ढालों पर होते हैं। इनमें मकान आपस में सटे हुए अथवा दूर-दूर दोनों ही प्रकार के होते हैं, जो ढाल के अनुसार विभिन्न ऊँचाई-तलों पर बने होते हैं। इनके मकानों की पंक्तियाँ सीढ़ीनुमा मालूम होती हैं, क्योंकि वे मकान कई स्तरों (tiers) में बसे होते हैं। हिमालय, आल्प्स, रॉकीज़, एण्डीज़ इत्यादि पर्वतों पर बसे हुए गाँव इस प्रतिरूप के होते हैं। इन गाँवों के खेत, गाँवों से ऊँचे तथा नीचे भागों पर बसे होते हैं। गाँवों की स्थिति ढाल पर किसी जलस्रोत (spring) के समीप या छोटी नदी (rivulet) या छोटी धारा (streamlet) के समीप होती है। ये मकान पत्थर, लकड़ी, स्लेट, आदि के बने होते हैं। ऐसे गाँव अधिकतर नदियों की घाटियों में, पर्वत कटकों पर, ढाल के अर्ध भागों (mid-slopes) पर बसे होते हैं।

12. चौकोर प्रतिरूप (Block pattern) — इस प्रकार के गाँव मरुस्थलों या अर्ध मरुस्थलों में बसे होते हैं। इनके मकान बहुत ऊँचे-ऊँचे होते हैं। गाँवों के बाहर **चारदीवारी** भी कहीं-कहीं होती है। मकानों को बहुत ऊँचा इसलिये बनाया जाता है, ताकि उनकी रेत के तूफानों, चोरों या डाकुओं और शत्रुओं से सुरक्षा हो सके।

13. मधु-छत्ता प्रतिरूप (Bee-hive pattern) — गुम्बदनुमा झोपड़ियों के गाँव दक्षिणी अफ्रीका में प्रायः जुलू लोग बनाते हैं। भारत में आदिवासी जन-जातियों के गुम्बदनुमा झोंपड़ियों के गाँव दक्षिण में टोडा लोगों के, आन्ध्र के समुद्रतटीय क्षेत्र के निवासियों और मछली उद्योग पर निर्वाह करने वाले मछुआ लोगों के होते हैं।

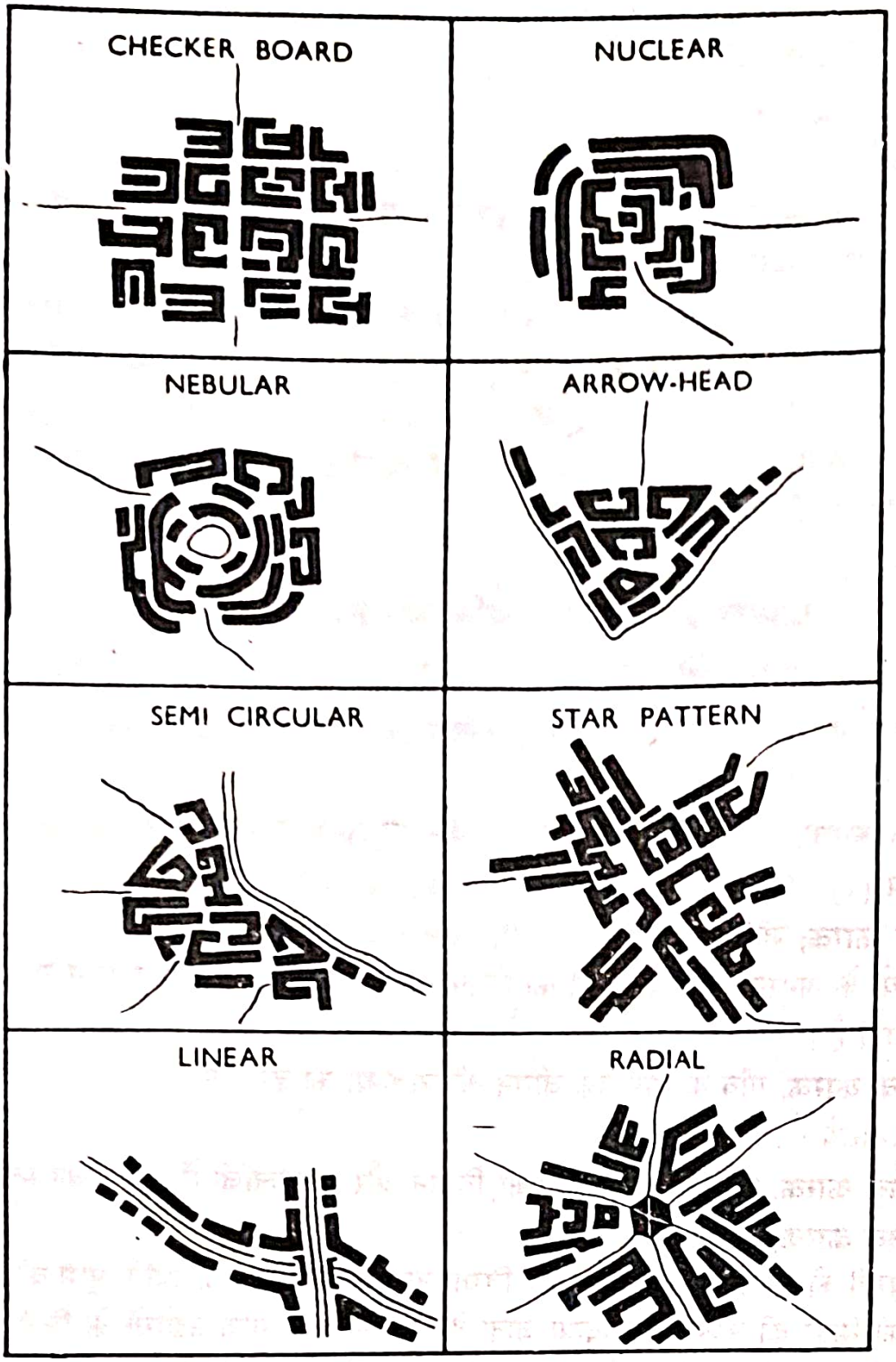

ग्रामीण बस्तियों के मुख्य प्रतिरूप (Main Patterns of Rural Settlements)।

14. अर्ध-वृत्ताकार प्रतिरूप (Semi-circular pattern)—नदियों के तटों पर बसे हुए गाँव प्रायः अर्धवृत्ताकार प्रतिरूप के होते हैं। उत्तर भारत में गंगा, यमुना, गोमती, घाघरा, कोसी, सोन, आदि नदियों के तटों पर बसे गाँव प्रायः इस प्रतिरूप के हैं।

15. अन्य प्रतिरूप — मकड़ी-जाल प्रतिरूप (web pattern), टेढ़ा-मेढ़ा प्रतिरूप (zig-zag pattern), आदि अन्य प्रतिरूपों की भी ग्रामीण बस्तियाँ संसार के बहुत-से प्रदेशों में बसी हुई देखी जाती हैं।